यह ज़मीन हमारी है

(नाटक शुरू होने पर बाबा ज्वाला सिंह कुर्सी पर बैठे हैं, बाहर से कनस्तर बजने की आवाज़ आती है।)

बाहर से आवाज़ : आम और खास को इत्तला दी जाती है कि दस दिन बाद दिनांक 9 फरवरी को गांव की आबादकारी वाली ज़मीन की नीलामी होगी। तहसीलदार साहब नीलामी के वक़्त हाज़िर रहेंगे। जो भी ज़मीन लेने में दिलचस्पी रखते हों, वो दस बजे से पहले पंचायत घर में पहुंच जाएं... *(कनस्तर बजाता है)*

भगत जी : *(नाटकीय ढंग से प्रवेश करता है)* पीपा बजाओ, खूब बजाओ, सरकार ने आना है, तहसीलदार साहब ने आना है, कानूनगो ने आना है, पटवारी ने आना है, सारी सरकार ने मिलकर गांव में आना है। पीपा नहीं, पीपे बजाओ।

बाबा : भगत जी, कौन पीपे बजाएं?

भगत जी : लोग बजाएं, सबके घरों में खाली पीपे हैं, अब खाली पीपे बजाओ, खाली पेट बजाओ। खास मौका है, सरकार ने आना है, कोई मजाक तो नहीं है।

बाबा : पर उन्होंने आना क्यों है?

भगत जी : जो गांव की सांझी है, जो किसी वक़्त बंजर होती थी, अब आबादकारों ने आबाद कर दी है। सरकार कहती है उसकी नीलामी होगी। सरकार का पीपा भी खाली है, सरकार को पैसे की ज़रूरत है, जो ज़्यादा बोली देगा ज़मीन उसी की हो जाएगी।

बाबा : ये ढिंढोरा इस बात का था?

भगत जी : हां... पर आबादकार कहते हैं, हम नीलामी नहीं होने देंगे। वो ज़मीन हमारी है। हम कहेंगे नीलामी नहीं होने देनी, सरकार

कहेगी नीलामी होगी, आबादकार कहेंगे, नीलामी नहीं होने देंगे। उनकी अगुवा होगी मास्टरनी सुरजीत कौर। एक तरफ तहसीलदार होगा, कानूनगो होगा, पटवारी होगा, दूसरी तरफ होगी मास्टरनी सुरजीत कौर। आमने-सामने की टक्कर होगी। हां, टक्कर होगी।

बाबा : पर भगत जी, तुझे इसमें क्या मिलेगा?

भगत जी : मज़ा आएगा।

बाबा : मज़ा?

भगत जी : हां, जब कहीं टक्कर होती है तो मज़ा आता है। ये भी कोई बात हुई कि जिंदगी पहिए की तरह घूमती रहे और कोई टक्कर ही न हो। बाकी बाबा जी, सरपंच सुखविंदर सिंह है ना, आपका पोता, वो तो निरा गोबर है।

बाबा : गोबर?

भगत जी : भला वो भी कोई आदमी है जिसका अपना कोई विचार ही न हो, जिसकी अपनी कोई आवाज़ ही न हो। जब वो सरपंच चुना गया तो लोगों ने कहा कि वो आपका पोता है, बाबा ज्वाला सिंह का पोता। बाबा ज्वाला सिंह जो सारी उम्र हक़ के लिए लड़ा, इंसाफ के लिए लड़ा, उसे बिना किसी मुकाबले के चुन लो। पर मैंने उस वक़्त भी कहा था कि पोता बेशक बाबा ज्वाला सिंह का है, पर बंदा निरा गोबर है।

बाबा : भगत जी, उसने किया क्या, जो तू अवा तवा बोल रहा है?

भगत जी : उसने ठेकेदार विक्रम सिंह से यारी गांठ ली है, उसी की बोली बोलता है, उसी की बैठक में बैठता है, वहां महफिल सजती है, दारू के दौर चलते हैं।

बाबा : तुझे कैसे पता?

भगत जी : गांव की हर बात का मुझे पता होता है। वो कौन सी गली, जहां भागो नहीं मिली। ठेकेदार विक्रम सिंह के घर कौन आता है, इसका मुझे पता है, उसके घर कौन जाता है, उसका मुझे पता है, कितने मुर्गे भूने गए, मुझे पता है। कितने बकरे चटकाए गए, मुझे पता है। शराब कौन सी पी गई, मुझे पता है। अब उसकी आंख आबादकारों वाली ज़मीन पर है, पर वे लेने देंगे तो... टक्कर होगी। एक तरफ सुरजीत कौर होगी, दूसरी तरफ सरकार

होगी, ठेकेदार विक्रम सिंह होगा। टक्कर होगी टक्कर। पीपे बजाओ, पेट बजाओ, सरकार के पीपे भी खाली, लोगों के पीपे भी खाली।

(कनस्तर बजाता हुआ बाहर जाता है)

बाबा : लोग इसे पागल कहते हैं, पर यह बात हमेशा पते की करता है।

(सरपंच आता है।)

सरपंच : कौन पते की बात करता है? ये भगत जी? बाबा जी, ये तो शैदाई है, पागल है, सरकार की बातों में दखल देता है, शोर करता है, किसी वक़्त घरवालों ने इसे उठाकर पागलखाने में फेंक आना है, वहां शोर मचाता रहे, पीपा बजाता रहे।

बाबा : ये बता गया है कि आबादकारों वाली ज़मीन की खुली नीलामी होगी।

सरपंच : हां, सरकार की तरफ से यह हुक्म आया है।

बाबा : पर तूने तो इस बारे में कोई बात नहीं की। तो अब ग्राम पंचायत का क्या कहना है, तेरा क्या कहना है?

सरपंच : मैंने बाबाजी, इसमें क्या कहना है?

बाबा : तेरा सब कुछ कहना बनता है, तू गांव का सरपंच है। तेरा फर्ज़ बनता है कि अपने लोगों के हितों की रक्षा करे और उनमें भी सबसे पहले साधनहीन लोगों की।

सरपंच : *(थोड़ा सा खीझकर)* बाबाजी, मुझे अपने फर्ज़ का पता है। आप जो कहना चाहते हो, वो भी मुझे पता है। सुरजीत आपके पास आई थी, ज़रूर कोई शिकायत कर गई होगी। अब वो नेतागिरी में पैर रख रही है।

बाबा : लोगों के हितों की रखवाली के लिए कोई आगे आए... यह अपने आप में अच्छी बात है और यह और भी अच्छी बात है कि सुरजीत जैसी समझदार लड़की आगे आए।

सरपंच : आपने तो कहना ही हुआ, वो भी हर जगह यही कहती फिरती है कि वो जो कुछ भी है बाबा जी की बदौलत है।

बाबा : कहती है तो ठीक ही कहती है, मैंने ही उसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया था। वो सारा साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी, जो जानकारी देता है कि किस तरह इतिहास के हर पड़ाव पर लोगों ने संघर्ष किया, ज़ुल्म से टक्कर ली, बेइंसाफी भरा जीवन खत्म किया

और नया समाज बनाया।

सरपंच : पर आबादकारों वाला मसला जो वो और आबादकार उठा रहे हैं, अब पंचायत के बस की बात नहीं रहा।

बाबा : क्यों ? पंचायत के बस की बात क्यों नहीं रहा ?

सरपंच : ऊपर से हुक्म आया है कि पंचायत इन परिवारों को आइंदा ज़मीन जोतने और बोने से रोक दे। यह ज़मीन अपने कब्जे में ले ले। और फिर खुली नीलामी में सबसे ज्यादा बोली लगाने वाले को दी जाए।

बाबा : ऊपर से हुक्म आया है और आपने मान लिया है ?

सरपंच : हम कर भी क्या सकते हैं ? और अगर हम हुक्म मानेंगे तो पंचायत की आमदनी भी तो बढ़ेगी। गांव की भलाई के काम पूरे हो सकेंगे।

बाबा : कुछ लोगों की भलाई करोगे और गरीबों के परिवारों को उजाड़ोगे, ये तेरी कैसी सोच है ?

सरपंच : बाबा जी, यह मेरी सोच नहीं, सरकार की सोच है।

बाबा : और तू सरकार की सोच का हिमायती है, तुझे पता है कि पिछड़ी और अनुसूचित जातियों से संबंधित ये आबादकार परिवार पिछले 34 सालों से इस ज़मीन को जोत-बो रहे हैं। ये ज़मीनें इन्हें 10 या 20 साल के पट्टे पर दी गई थीं।

सरपंच : पट्टे पर दी गई थीं पर इसका मतलब यह तो नहीं कि यह ज़मीन पक्के तौर पर इनकी हो गई है ?

बाबा : हो नहीं गई तो कोई ऐसा रास्ता निकाला जाना चाहिए कि इनकी हो जाए। ये बेदखल न हों क्योंकि ये ज़मीन ऐसे ही जोतने लायक नहीं हो गई। आबादकारों ने ये ज़मीनें सख्त मेहनत करके कुदरती आफतों का मुकाबला करते हुए आबाद की हैं। मेरी आंखों के सामने सबकुछ हुआ है।

सरपंच : पर अब तो यह बंजर नहीं है, इसकी कीमत लाखों में है, सरकार यह मुफ्त में इन्हें कैसे दे दे ?

बाबा : मुफ्त में न दे, पर बेदखल करने का भी सरकार को अधिकार नहीं है। इस बारे में कोई एक्ट बनाया जा सकता है। उस वक्त की सरकार ने ये बंजर और खाली पड़ी ज़मीनें इन गरीब परिवारों को 1949 के पूर्वी पंजाब ज़मीन इस्तेमाल एक्ट के तहत अलाट

की थीं। किसान और मजदूर संगठनों ने इसके लिए संघर्ष किया था।

सरपंच : मुझे पता है इस संघर्ष में आपने भी मोर्चा लगाया था और जेल भी गए थे, पर...

बाबा : पर क्या ? उस वक़्त ऐसे ऐलान किए गए थे कि सरकार मालिक की कमी को दूर करने के लिए, खेती को उत्साहित करने के लिए ये ज़मीनें आबादकारां को अलॉट कर रही है। यह यकीन दिलाया गया था कि काश्तकार, आबादकार बाद में ज़मीनों के मालिक बना दिए जाएंगे। मालिक बनाना भी था, अब सरकार नए फरमान लेकर आ गई है कि ये ज़मीनें इनके पास न रहें। इनसे रोजगार और कमाई का एकमात्र वसीला भी छीन लिया जाए।

सरपंच : सरकार छीनना नहीं चाहती, बल्कि पहल उन्हीं को दी जाएगी कि वे ज़मीनों के पक्के मालिक बन जाएं, वे इसकी तय कीमत चुका दें।

बाबा : ये उनकी आंखों में धूल झोंकने वाली बात है। हर कोई जानता है कि गरीब आदमी यह कीमत नहीं चुका सकेगा। हां, चौधरी ये मोल आसानी से चुका सकेंगे और इस ज़मीन पर कब्जे की अपनी हवस पूरी कर लेंगे।

सरपंच : आप तो बाबाजी हर बात में गरीब और अमीर की बात ले आते हो।

बाबा : बात ही गरीब और अमीर की है। हमारी ये सरकार पैसे वालों की सरकार है। यह जो भी नीति बनाएगी, वो अमीरों के हक़ की होगी। अब तो यह बात दिन की धूप की तरह साफ है।

सरपंच : बाबा जी, आप तो पता नहीं किस वक़्त की बातें करते हो।

बाबा : मैं आज के वक़्त की ही बातें कर रहा हूं। इनकी बात इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि इन आबादकारों ने अपने सारे साधन और शक्ति झोंककर इन ज़मीनों को आबाद किया है। इन ज़मीनों पर इनका हक़ है। तू सरपंच है, अफ़सरों की मीटिंग में जब भी मौका मिले, इनके हक़ की आवाज़ उठा। अगर सरकार ने जिद की तो यहां खून की नदियां बह जाएंगी, किसी भी सूरत में आबादकार ज़मीनों का कब्जा नहीं छोड़ेंगे। यह बात तू भी

समझ ले और तेरी सरकार भी। बुज़ुर्गों की सभा में भी यह बात होनी है, मैं जा रहा हूं, अपनी मां को कह देना, रोटी मैं आकर खाऊंगा, अगर देर हो गई तो फिक्र न करे।

(जाता है)

सरपंच : बाबा जी भी हद करते हैं, भला लाखों की ज़मीन सरकार छोड़ती है। सरकार ने नीलामी की तैयारी कर ली है और ये सारे कागज़ भेज दिए हैं... आबादकारों ने अगर कोई संकट खड़ा कर दिया तो फिर क्या होगा... चलो जो होगा, देखा जाएगा।

(ठेकेदार विक्रम सिंह के आने की आवाज़ आती है।)

विक्रम सिंह : *(बाहर से)* क्यों भई सरपंच, घर में ही है?

सरपंच : घर में ही हूं, अंदर आ जाओ ठेकेदार जी।

विक्रम सिंह : किस सोच में है?

सरपंच : आबादकारों वाले मामले में बाबा जी बड़े भावुक हैं, सुरजीत कौर का असर अब इन पर भी हो गया है।

विक्रम सिंह : सुखविंदर सिंह, गांव का सरपंच तू है, हुक्म यहां सुरजीत कौर का चलता है। वो कहती फिर रही है कि बाबा ज्वाला सिंह के पोते को सर्वसम्मति से सरपंच चुना गया है, वो हमारी मर्ज़ी के खिलाफ नहीं जा सकता। जिस दावे से वो कह रही है उससे तो ऐसा लगता है कि उसका जादू तुझ पर पूरी तरह चल गया है पर एक बात सुन ले, पूरी चालीस एकड़ ज़मीन इन आबादकारों के कब्जे में है। कुल कीमत दस लाख से ऊपर बैठती है। दस लाख की ज़मीन की अगर मल्कीयत बदले तो इसमें समझदार लोगों की चांदी ही चांदी है। बड़े अफ़सर अपने साथ हैं...

सरपंच : पर बाबा जी...?

विक्रम सिंह : तू बाबा जी की बात मत कर। पुराने वक़्त के देशभक्त हैं। उन्हें क्या पता समाज कैसे चलता है, कल वे चौपाल में कह रहे थे कि ऊपर वाले अफ़सर अगर आबादकारों की ज़मीन की नीलामी करना भी चाहें तो गांव का कोई आदमी बोली ही न लगाए, अब तू सोच ले, अपने बाबा की बात माननी है या लाख, दो लाख पर हाथ मारना है।

सरपंच : लाख, दो लाख?

विक्रम सिंह : अगर बाबा जी की राय गांव वालों ने मान ली तो न तेरा कुछ

बनना है न हमारा। ऐसे मौके बार-बार नहीं आते और यह मौका भी उस वक़्त मिला है जब सरकार की नई आर्थिक नीति इस सोच से चल रही है कि लोगों को ख्वामख्वाह में दी जा रही सहूलियतें धीरे-धीरे वापिस ले लो। सरकार के खाली खज़ाने भरो। उस भगत जी की कोई और बात ठीक हो न हो, पर वो यह ठीक कह रहा है कि सरकार का पीपा खाली हो गया है।

सरपंच : वो तो हर बात पीपों पर ही करता है। ठेकेदार, अगर शोर मच गया तो आने वाले चुनावों के मद्देनज़र सरकार ये सबकुछ कर सकेगी?

विक्रम सिंह : अरे सरकार बड़ी चालें चलती है, इधर दी गई रियायतें छीन लेगी, उधर कुछ और रियायतों का ऐलान कर देगी। बच्चों को आधी छुट्टी में खाना दिया जाएगा, बुजुर्गों को पेंशन दी जाएगी, जब तक बुजुर्गों की लिस्टें बनेंगी, इलेक्शन निकल जाएंगे।

सरपंच : और बुजुर्ग दूसरे जहान में पहुंच गए होंगे।

विक्रम सिंह : चल छोड़, ये बातें तो चलती रहेंगी, पर हमने यह मौका नहीं गंवाना।

सरपंच : मेरे जिम्मे क्या काम है?

विक्रम सिंह : तूने अपने असर-रसूख का इस्तेमाल इस बात के लिए करना है कि ये नीलामी हो जाए। बोली के लिए कुछ आदमी मैं तैयार कर लूंगा।

सरपंच : आदमी तो तैयार कर लेगा पर वे कब्जा छोड़ेंगे? वो कहते हैं कि खून की नदियां बह जाएंगी पर कब्जा नहीं छोड़ेंगे।

विक्रम सिंह : ये सब कहने की बातें हैं। असल में यह सरकार का मामला है, सरकार ने इतनी पुलिस यूं ही रख छोड़ी है, खुद कब्जा दिलवाएगी। और जो खरीदेंगे उनके साथ तो लठैत होंगे। आदमी बुला रखे हैं। महफिल भी सजेगी, शहर से विलायती मंगवा रखी है।

(जाने लगता है तो सामने से सुरजीत मिल जाती है। विक्रम उसे घूरती नज़र से देखता है।)

विक्रम सिंह : सत श्री अकाल, मास्टरनी जी।

सुरजीत : सत श्री अकाल, कहीं मैंने तुम्हारी किसी बात में खलल तो नहीं डाल दिया?

विक्रम सिंह : नहीं, मैं तो सरपंच से मिलने आया था, अपना यार है।

सरजीत : यह तो मुझे भी पता है कि नई योजनाएं बन रही हैं... मैं भी यही बात करने आई हूं।

विक्रम सिंह : करो, ज़रूर करो, मैं क्यों कबाब में हड्डी बनूं।
(जाता है। जाते हुए मूड इस तरह है मानो कोई चुनौती देकर गया हो।)

सरपंच : तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।

सुरजीत : ऐसा ही करना चाहिए था। आबादकारी ज़मीन की नीलामी हमारे लोगों के लिए ज़िंदगी-मौत का सवाल है और ठेकेदार विक्रम सिंह इसका मुद्दई है, पर मुझे आपसे उम्मीद नहीं थी कि आप भी सरकार का पक्ष लेंगे।

सरपंच : मैंने किसका पक्ष लिया है, पर मैं यह बात साफ कहता हूं कि सरकार ने अगर बीस साल पहले जोतने के लिए ज़मीन पट्टे पर दी थी तो इसका यह मतलब नहीं कि आबादकार मालिक ही बन बैठें।

सुरजीत : सरपंच साहब, यह ज़मीन जोतने के लिए नहीं दी गई थी, जोतने लायक तो यह थी ही नहीं, बल्कि ज़मीन आबाद करने के लिए दी गई थी।

सरपंच : चलो यह भी मान लें कि आबाद करने के लिए दी थी, पर दी तो मुफ्त में ही थी और दी भी पट्टे पर थी। अब आबाद हो गई तो समझौता नए सिरे से होना चाहिए।

सुरजीत : पर सरकार जी, कोई नया समझौता करते वक़्त उस मेहनत को तो नहीं भुलाया जा सकता, जो आबादकारों ने इस ज़मीन को आबाद करने में लगाई है। सरकार अपने लोगों को दूसरी इतनी रियायतें देती है, अगर पट्टेदारों को पक्के तौर पर ज़मीन दे भी देगी तो सरकार का खज़ाना खाली तो नहीं होने लगा। बाकी आप सरपंच हो, इसका कोई ऐसा रास्ता निकालो जिससे सरकार की बात भी रह जाए और आबादकारों की भी।

सरपंच : क्या रास्ता निकाला जा सकता है?

सुरजीत : ज़मीन की नीलामी न हो, सरकार मुफ्त में न भी दे, आबादकारों को मैं मना लूंगी कि वे जो संभव हो, ज़मीन की कीमत धीरे-धीरे अदा कर दें।

सरपंच : अगर सरकार न माने, खुली नीलामी के हुक्म पर कायम रहे?

सुरजीत : अगर सरकार ज़िद करेगी कि नीलामी ज़रूर हो तो आबादकार सरकार से टक्कर लेने को मजबूर होंगे।

सरपंच : क्या आबादकार कानून हाथ में लेंगे ?

(बाबा जी आते हैं)

बाबा : अरे तू कब सरपंच बना है, सरकारे-दरबारे तेरा उठना-बैठना हो गया है, तू कानून की बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है और सुन, कानून अपने आप में कोई चीज़ नहीं है। अंग्रेजों के वक़्त जब हम पर लाठियां बरसाई जाती थीं, जेलों में फेंका जाता तो वे भी कानून की बातें करते थे। वो कानून, कानून होता है जो गरीबों-दुखियों की सेवा करे, उनके हक में हो। बेटी, तुम तसल्ली रखो, हम सब मिलकर इस बात पर पहरा देंगे कि किसी के साथ ज्यादती न हो। तुम पूरी तरह संगठित होकर संघर्ष करो।

सुरजीत : बाबा जी, हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।

(सुरजीत थोड़ा झुकती है, बाबा जी उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं। वह चली जाती है।)

सरपंच : बाबा जी, आप इसे यहां शह दे देते हो, वहां ये सबके सामने मेरी इज्ज़त उतार कर रख देती है।

बाबा : तू अगर न्याय की बात करे तो किसकी मजाल है कि तेरी इज्ज़त उतार सके और अगर तू ठेकेदार विक्रम सिंह की बोली बोलेगा तो तेरी इज्ज़त उतरेगी ही।

सरपंच : विक्रम सिंह की बोली ?

बाबा : कि विक्रम सिंह सरकारी कारिंदों से मिलकर आबादकारों की ज़मीन की नीलामी करवाना चाहता है, उसने ग्राहक भी तैयार कर लिए हैं, अपना कमीशन भी तय कर लिया है और तेरा हिस्सा भी तय कर दिया है। मेरे से इन दलालों के कारनामे छुपे नहीं हैं।

सरपंच : दलाल ?

बाबा : हां दलाल, और दलाल सिर्फ इस गांव में ही नहीं हैं बल्कि सारे देश में हैं। ये हर रोज़ जो अखबारों में खबरें आ रही हैं कि विदेशी कंपनियां सबकुछ खरीद रही हैं, ये वो दलाली वाला धंधा है।

सरपंच : बाबा जी, आप कहां की बात कहां ले जाते हो।

बाबा : बात तुझे दलालों की समझा रहा हूं, 90 करोड़ लोगों के देश के हित विदेशियों के हाथों बेच दो और अपनी दलाली की रकम खरी करो, ठेकेदार विक्रम सिंह और इस तरह के लोगों को मैं भूला नहीं हूं।

सरपंच : आपकी बात ठीक हो सकती है कि पर अधिकारियों की बैठक में यह बात ज़ोर देकर कही जा रही है कि सरकार यह कदम पंचायतों की आमदनी बढ़ाने के लिए उठा रही है।

बाबा : सरकार जो चाहे कहे, पर असल में इस कदम के पीछे धनवान चौधरियों के हित काम कर रहे हैं, जो इन ज़मीनों को अपने पैसे और ताकत से हड़प लेना चाहते हैं।

सरपंच : आपका मतलब है कि लोगों के वोटों से चुनी गई सरकार धनवान चौधरियों के हित की सरकार है ?

बाबा : मेरा मतलब ही नहीं बल्कि मैं स्पष्ट कह रहा हूं कि यह अमीरों के हितों की ही सरकार है। ये चुनाव, ये सरकारें सब पैसे का खेल बन गए हैं। एक तरफ सरकार ज़मीन हदबंदी कानून खत्म करने को उतावली है दूसरी तरफ गरीब किसानों को ज़मीनों से उजाड़ने के हालात पैदा कर रही है और हां, यह भी सुन ले, यहां खून की नदियां बह जाएंगी लेकिन आबादकार ज़मीन का कब्जा नहीं छोड़ेंगे। तू अगर इसमें कुछ कर नहीं सकता तो कम से कम इसमें भागीदार मत बन, दूर हट जा, बस मैं इतना ही कहूंगा।

(बाहर जाता है, सरपंच अब सोच में खड़ा है। आवाज़ों का टकराव चल रहा है)

विक्रम सिंह : सुखविंदर सिंह, ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। ज़मीन नीलाम हो गई तो तेरा हिस्सा खरा है।

सुरजीत : यहां खून की नदियां बह जाएंगी। यह ज़मीन हमारी है, यह ज़मीन हम नहीं छोड़ेंगे।

भगत जी : सरकार का पीपा खाली, लोगों का पीपा खाली।

बाबा : तू सरपंच है, तेरा फर्ज़ बनता है कि अपने लोगों के हितों की रक्षा करे। तू सरपंच है... तू सरपंच है...

विक्रम सिंह : इस तरह के मौके बार-बार नहीं आते।

बाबा : तू सरपंच है।

विक्रम सिंह : तेरा हिस्सा खरा है।

सरपंच : नहीं, मैं दूर नहीं हट सकता, तहसीलदार आएगा, कानूनगो आएगा, पटवारी आएगा, ज़मीन की नीलामी होगी, विक्रम सिंह ठीक कहता है कि मेरा हिस्सा खरा है।

आवाज़ : तेरा हिस्सा खरा है...

सरपंच : नहीं, मैं दूर नहीं हट सकता, मैं अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा।

(स्टेज खाली करता है।)

अंतिका

(स्टेज के पीछे से भगत जी की आवाज़)

भगत जी : एक तरफ सरकार
पटवारी तहसीलदार
दूसरी तरफ सुरजीत कौर
बाबा जी और आबादकार
शुरू हुआ है तकरार
हो जाओ सब खबरदार
(कनस्तर बजाता हुआ मंच पर आता है। दूसरी तरफ से बाबा जी का प्रवेश)
बाबा जी नीलामी शुरू हुई
नीलामी खत्म हुई
नीलामी वालों ने कहा,
दस हज़ार एक
दस हज़ार दो
और सब तरफ से पीपे बज उठे,
इधर भी पीपे, उधर भी पीपे
ऊपर भी पीपे, नीचे भी पीपे
सब तरफ पीपे ही पीपे।
आबादकारों की भीड़ ने सरकार को घेर लिया। पुलिस ने धमकियां दी, लाठियां बरसाईं, पर लोग अपनी जगह से हिले तक नहीं, धरती पर खून बहा। सुरजीत कौर ने अपना दुपट्टा खून से रंगकर ऊंचा किया। भीड़ ने ललकार लगाई। सरकार भाग खड़ी हुई। तहसीलदार भी भाग गया, कानूनगो भी भाग गया, पटवारी भी

भाग गया, ठेकेदार विक्रम सिंह भी भाग गया। सरपंच ने नीलामी के सारे कागज़ फाड़कर फेंक दिए और कहा, वह अपने लोगों के साथ है, वह गोबर नहीं है, बाबा जी, सरकार हार गई, लोग जीत गए।

(कनस्तर बजाता है।)

होशियार, खबरदार
लोगों की नायिका सुरजीत कौर आ रही है।
लोगों का चुना हुआ सरपंच आ रहा है।
अब होंगी महलों चौबारों की बातें
अब होंगी मिट्टी की झोंपड़ियों की बातें।

(सुरजीत कौर आती है, बाबा जी के चरण स्पर्श करती है। सरपंच को बाबा जी आगोश में ले लेते हैं।)

सुरजीत कौर : बाबा जी, आपने मुझे एक किताब दी थी, 'खून सना झंडा', उसमें इतिहास था, शिकागो के मज़दूरों का, जिन्होंने सफेद झंडे को अपने खून से लाल कर दिया था। आज भी ये खून से रंगा दुपट्टा इस बात का गवाह है कि मेहनत करने वाले लोग हकों की खातिर अपना खून बहाकर लाल झंडे को जन्म देंगे।

(एक विशेष मुद्रा में झंडा ऊंचा करती है और दूसरे पात्र बाजू तान लेते हैं।)